Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में द्वादश ज्योतिर्लिंग और भारतीय सांस्कृतिक एकता : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. मधुसूदन चौबे*

* एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बडवानी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान-परम्पराओं में से एक है, जिसमें धर्म, दर्शन, संस्कृति, शिक्षा, कला, साहित्य तथा सामाजिक जीवन का समन्वित स्वरूप परिलक्षित होता है। इस परम्परा में तीर्थ केवल धार्मिक आस्था के केन्द्र नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक निरन्तरता, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रीय एकात्मता के सशक्त माध्यम भी हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग भारतीय शैव परम्परा के सर्वाधिक प्रतिष्ठित तीर्थ हैं, जिनका उल्लेखशिवपुराण, लिङ्गपुराण, स्कन्दपुराणसहित अनेक संस्कृत ग्रन्थों में मिलता है। भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित ये ज्योतिर्लिंग भारतीय सांस्कृतिक भूगोल का ऐसा सशक्त नेटवर्क निर्मित करते हैं, जिसने प्राचीन काल से ही विविध भाषायी, सांस्कृतिक एवं सामाजिक समुदायों को एक साझा सभ्यतागत चेतना से जोड़ा है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के परिप्रेक्ष्य में द्वादश ज्योतिर्लिंगों के ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक महत्तव तथा भारतीय सांस्कृतिक एकता के निर्माण में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन गुणात्मक एवं ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है तथा इसमें पुराण, उपनिषद, अभिलेखीय साक्ष्य, पुरातात्तिवक अध्ययन, इतिहासलेखन तथा आधुनिक शोध-साहित्य का समन्वित उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि द्वादश ज्योतिर्लिंग केवल धार्मिक संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक भूगोल, तीर्थ-परम्परा, स्थापत्य-कला, लोकजीवन, व्यापारिक सम्पर्क तथा सांस्कृतिक संवाद के महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहे हैं। वर्तमान समय में भी ये तीर्थ सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक पर्यटन तथा राष्ट्रीय एकात्मता के सुदृढ़ आधार के रूप में महत्तवपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अत: द्वादश ज्योतिर्लिंगों का अध्ययन भारतीय इतिहास, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त प्रासंगिक है।

शब्दकुंजी– भारतीय ज्ञान परम्परा, द्वादश ज्योतिर्लिंग, सांस्कृतिक एकता, शैव परम्परा, तीर्थ-परम्परा, भारतीय इतिहास, सांस्कृतिक भूगोल।

प्रस्तावना – भारत का इतिहास केवल राजवंशों, युद्धों अथवा राजनीतिक घटनाओं का इतिहास नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी सभ्यता का इतिहास है जिसकी निरन्तरता सहस्राब्दियों तक बनी रही। इस निरन्तरता का मूल आधार भारतीय ज्ञान परम्परा है, जिसने विविध भाषाओं, संस्कृतियों, आस्थाओं तथा सामाजिक परम्पराओं को एक साझा सभ्यतागत दृष्टि से जोड़ा। भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म, दर्शन, शिक्षा, कला, विज्ञान तथा सामाजिक जीवन परस्पर पूरक रहे हैं और इसी समन्वय ने भारतीय संस्कृति को दीर्घजीवी बनाया है।

भारतीय सभ्यता की विशिष्टता उसकी 'विविधता में एकता' की अवधारणा में निहित है। हिमालय से कन्याकुमारी तथा द्वारका से कामरूप तक विस्तृत इस भूभाग में भाषायी, जातीय तथा सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद एक साझा सांस्कृतिक चेतना विद्यमान रही। इस सांस्कृतिक एकता के निर्माण में तीर्थ-परम्पराओं, मठों, आश्रमों, धार्मिक यात्राओं तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। तीर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठानों के केन्द्र नहीं थे, बल्कि वे शिक्षा, दर्शन, व्यापार, लोकसंस्कृति तथा सामाजिक सम्पर्क के भी प्रमुख केन्द्र रहे।

भारतीय ज्ञान परम्परा में भगवान शिव का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वैदिक साहित्य में रुद्र के रूप में वर्णित शिव का स्वरूप उत्तरवैदिक एवं पुराणकाल में व्यापक दार्शनिक एवं सांस्कृतिक आयाम ग्रहण करता है। शैव परम्परा भारतीय धर्म एवं दर्शन की प्रमुख धाराओं में से एक है, जिसने भारत के विभिन्न क्षेत्रों को एक साझा आध्यात्मिक परम्परा से जोड़ा। इसी शैव परम्परा के अंतर्गत द्वादश ज्योतिर्लिंगों की प्रतिष्ठा हुई, जिन्हें शिव के दिव्य प्रकाशस्वरूप का प्रतीक माना गया है।

द्वादश ज्योतिर्लिंग भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित हैं और उनका भौगोलिक विस्तार भारतीय सांस्कृतिक एकता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। गुजरात का सोमनाथ, आंध्र प्रदेश का मल्लिकार्जुन, मध्य प्रदेश के महाकालेश्वर एवं ओंकारेश्वर, उत्तराखण्ड का केदारनाथ, उत्तर प्रदेश का काशी विश्वनाथ, महाराष्ट्र के त्र्यंबकेश्वर, भीमाशंकर एवं घृष्णेश्वर, झारखंड का वैद्यनाथ, गुजरात का नागेश्वर तथा तमिलनाडु का रामेश्वरम्कृये सभी तीर्थ भारत की सांस्कृतिक विविधता को एक सूत्र में बाँधते हैं। इन तीर्थों ने प्राचीन काल से तीर्थ-यात्रा, सांस्कृतिक सम्पर्क, धार्मिक संवाद, स्थापत्य विकास तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था के माध्यम से राष्ट्रीय एकात्मता को सुदृढ़ किया।

समकालीन इतिहासलेखन में भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनर्पाठ पर विशेष बल दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति-2020 तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित शैक्षणिक विमर्श ने यह आवश्यकता रेखांकित की है कि

भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन केवल धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं अंतर्विषयक परिप्रेक्ष्य से किया जाए। द्वादश ज्योतिर्लिंगों का अध्ययन इसी आवश्यकता की पूर्ति करता है क्योंकि ये तीर्थ भारतीय सभ्यता की निरन्तरता, सांस्कृतिक भूगोल तथा सामाजिक समन्वय के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

यद्यपि द्वादश ज्योतिर्लिंगों पर धार्मिक एवं पौराणिक साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, तथापि भारतीय सांस्कृतिक एकता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इनका समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी शोध-अंतर की पूर्ति का प्रयास करता है तथा भारतीय ज्ञान परम्परा, इतिहासलेखन, पुरातत्त्व, सांस्कृतिक अध्ययन तथा तीर्थ-भूगोल के समन्वित दृष्टिकोण से द्वादश ज्योतिर्लिंगों का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

साहित्य समीक्षा

द्वादश ज्योतिर्लिंग, शैव परम्परा तथा भारतीय सांस्कृतिक एकता के अध्ययन के लिए उपलब्ध साहित्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि इस विषय पर धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टियों से पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। तथापि भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में द्वादश ज्योतिर्लिंगों को भारतीय सांस्कृतिक एकता के ऐतिहासिक आधार के रूप में विश्लेषित करने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रख्यात विद्वान डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डे ने भारतीय संस्कृति की निरन्तरता और उसके आध्यात्मिक आधारों की विवेचना करते हुए स्पष्ट किया है कि भारत की सांस्कृतिक एकता का निर्माण राजनीतिक शक्ति से अधिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से हुआ। उनके अनुसार तीर्थ, आश्रम, मठ और मंदिर भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना के प्रमुख केन्द्र रहे हैं।

डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी प्रसिद्ध कृति The Fundamental Unity of India में यह प्रतिपादित किया कि भारत की राष्ट्रीय एकता का आधार प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं में निहित रहा है। उनके अनुसार तीर्थ-यात्राएँ, पवित्र नदियाँ तथा धार्मिक केन्द्र भारत की एकात्म चेतना के निर्माण में अत्यंत प्रभावशाली रहे हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग इसी सांस्कृतिक एकता के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं।

वासुदेव शरण अग्रवाल ने भारतीय कला, संस्कृति एवं धर्म के अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि भारतीय मंदिर केवल पूजा के स्थल नहीं थे, बल्कि ज्ञान, कला, लोकसंस्कृति और सामाजिक जीवन के केन्द्र भी थे। उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मंदिर संस्थाओं ने भारतीय सांस्कृतिक निरन्तरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन और धर्म के अध्ययन में यह प्रतिपादित किया कि भारतीय आध्यात्मिक परम्पराओं का मूल उद्देश्य मानव और ब्रह्माण्ड के बीच समन्वय स्थापित करना है। शिव परम्परा इसी समन्वयवादी दृष्टि की प्रतिनिधि है, जिसने भारत के विविध क्षेत्रों को एक सांस्कृतिक सूत्र में जोड़ा।

पंडित भगवद्दत्त ने भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि भारतीय इतिहास की व्याख्या भारतीय स्रोतों और भारतीय दृष्टिकोण के आधार पर की जानी चाहिए। उनके अनुसार पुराण, उपनिषद, महाकाव्य तथा स्थानीय परम्पराएँ भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

डॉ. सतीश चन्द्र मित्तल ने भारतीय इतिहास लेखन में उपनिवेशवादी दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित किया है। उनके अनुसार भारत की सांस्कृतिक एकता का निर्माण धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के माध्यम से हुआ, जिसका अध्ययन भारतीय दृष्टि से किया जाना चाहिए।

डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय ने भारतीय इतिहास के सांस्कृतिक आयामों पर बल देते हुए यह प्रतिपादित किया कि भारतीय सभ्यता की निरन्तरता का आधार उसकी ज्ञान-परम्परा, तीर्थ-परम्परा तथा सांस्कृतिक संस्थाएँ हैं। उनके शोधों में भारतीय इतिहास को भारतीय स्रोतों के आधार पर समझने का आग्रह दिखाई देता है।

डॉ. कपिल कपूर ने भारतीय ज्ञान प्रणाली पर अपने अध्ययनों में यह स्पष्ट किया कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल दार्शनिक विमर्श नहीं है, बल्कि समाज, संस्कृति, शिक्षा और जीवन-पद्धति का समेकित ज्ञानतंत्र है। उनके विचार द्वादश ज्योतिर्लिंगों को भारतीय सांस्कृतिक चेतना के अंग के रूप में समझने में सहायक हैं।

शैव परम्परा के मूल स्रोतों में शिवपुराण, लिङ्गपुराण, स्कन्दपुराण, कूर्मपुराण तथा वायुपुराण विशेष महत्व रखते हैं। इन ग्रंथों में ज्योतिर्लिंगों की उत्पत्ति, महात्म्य, तीर्थ-परम्परा तथा सांस्कृतिक महत्व का विस्तृत वर्णन मिलता है। यद्यपि इनका स्वरूप धार्मिक है, तथापि भारतीय सांस्कृतिक भूगोल तथा सामाजिक इतिहास के अध्ययन में इनकी उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारतीय इतिहास संकलन योजना, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों में हाल के वर्षों में किए गए शोधों ने भी भारतीय तीर्थ-परम्परा को सांस्कृतिक एकता के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि तीर्थ केवल धार्मिक केन्द्र नहीं थे, बल्कि सांस्कृतिक संवाद, लोकसंस्कृति, व्यापारिक सम्पर्क और राष्ट्रीय चेतना के वाहक भी थे।

उपलब्ध साहित्य का समग्र अध्ययन यह संकेत करता है कि द्वादश ज्योतिर्लिंगों के धार्मिक महत्व पर पर्याप्त कार्य हुआ है, परन्तु भारतीय ज्ञान परम्परा, सांस्कृतिक भूगोल और राष्ट्रीय एकता के समन्वित ऐतिहासिक अध्ययन की अभी भी पर्याप्त आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध इसी दिशा में एक प्रयास है।

शोध-अंतर- उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से निम्नलिखित शोध-अंतर स्पष्ट होते हैं-

1. द्वादश ज्योतिर्लिंगों पर अधिकांश अध्ययन धार्मिक एवं पौराणिक पक्ष तक सीमित हैं।
2. भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में इनका व्यवस्थित ऐतिहासिक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हुआ है।
3. भारतीय सांस्कृतिक एकता के निर्माण में द्वादश ज्योतिर्लिंगों की भूमिका पर स्वतंत्र शोध सीमित हैं।
4. पुराणीय, अभिलेखीय और सांस्कृतिक स्रोतों के समन्वित अध्ययन का अभाव दिखाई देता है।
5. तीर्थ-परम्परा और सांस्कृतिक भूगोल के अंतर्संबंधों का पर्याप्त ऐतिहासिक अध्ययन अभी अपेक्षित है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. भारतीय ज्ञान परम्परा में द्वादश ज्योतिर्लिंगों की अवधारणा का अध्ययन करना।

2. द्वादश ज्योतिर्लिंगों के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करना।
3. भारतीय सांस्कृतिक एकता के निर्माण में उनकी भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. तीर्थ-परम्परा और सांस्कृतिक भूगोल के अंतर्संबंधों का अध्ययन करना।
5. भारतीय ज्ञान परम्परा और शैव परम्परा के संबंधों का विश्लेषण करना।
6. समकालीन भारत में द्वादश ज्योतिर्लिंगों की सांस्कृतिक प्रासंगिकता का परीक्षण करना।

शोध प्रश्न

1. भारतीय ज्ञान परम्परा में द्वादश ज्योतिर्लिंगों की अवधारणा का विकास कैसे हुआ?
2. इनके ऐतिहासिक विकास के प्रमुख स्रोत कौन-कौनसे हैं?
3. भारतीय सांस्कृतिक एकता के निर्माण में इनकी क्या भूमिका रही?
4. तीर्थ-परम्परा ने भारतीय सांस्कृतिक भूगोल को किस प्रकार प्रभावित किया?
5. वर्तमान भारत में द्वादश ज्योतिर्लिंगों की सांस्कृतिक प्रासंगिकता क्या है?

शोध पद्धति- प्रस्तुत शोध गुणात्मक तथा ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों के रूप में शिवपुराण, लिङ्गपुराण, स्कन्दपुराण, महाभारत, श्वेताश्वतर उपनिषद्तथा उपलब्ध अभिलेखीय साक्ष्यों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में भारतीय इतिहासकारों, सांस्कृतिक चिन्तकों तथा भारतीय ज्ञान परम्परा से संबंधित विद्वानों की कृतियों का अध्ययन किया गया है।

स्रोतों के परीक्षण हेतु ऐतिहासिक आलोचनातथा तुलनात्मक अध्ययन की पद्धति अपनाई गई है। अध्ययन का स्वरूप अंतर्विषयक है, जिसमें इतिहास, संस्कृति, धर्म-अध्ययन, पुरातत्तव तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों का समन्वय किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में भगवान शिव की अवधारणा- भारतीय ज्ञान परम्परा में भगवान शिव केवल एक देवता नहीं, बल्कि सृष्टि, स्थिति और संहार के शाश्वत सिद्धान्त के प्रतीक हैं। वैदिक साहित्य में शिव का प्रारम्भिक स्वरूप 'रुद्र' के रूप में प्राप्त होता है।ऋग्वेद में रुद्र को औषधियों के अधिपति, रोगनाशक, पशुओं के रक्षक तथा कल्याणकारी शक्ति के रूप में वर्णित किया गया है। उत्तरवैदिक काल में यही रुद्र पुराणों में महादेव, शंकर, पशुपति, नटराज, महाकाल तथा विश्वनाथ जैसे विविध स्वरूपों में प्रतिष्ठित हुए।

श्वेताश्वतर उपनिषद्में रुद्र को समस्त सृष्टि का परम कारण एवं ब्रह्मस्वरूप स्वीकार किया गया है। यहाँ शिव का स्वरूप किसी सम्प्रदाय विशेष तक सीमित न होकर सार्वभौमिक चेतना का प्रतीक बन जाता है। भारतीय दर्शन में शिव का तत्तव ज्ञान, तप, योग, वैराग्य तथा लोकमंगल का समन्वित रूप है।

भारतीय ज्ञान परम्परा की विशेषता यह रही कि उसने धर्म को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जोड़ा। शिव इसी समन्वयवादी दृष्टि के प्रतिनिधि हैं। वे तपस्वी भी हैं और गृहस्थ भीय संहारक भी हैं और कल्याणकारी भीय योगी भी हैं और लोकनायक भी। यही कारण है कि शिव-उपासना भारत के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में विभिन्न रूपों में विकसित हुई और उसने सांस्कृतिक एकता के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शैव परम्परा के विकास के साथ मंदिर संस्थाओं, मठों, अखाड़ों तथा तीर्थों का व्यापक विस्तार हुआ। इन संस्थाओं ने केवल धार्मिक जीवन को ही प्रभावित नहीं किया बल्कि शिक्षा, दर्शन, कला, संगीत, स्थापत्य तथा सामाजिक संगठन को भी नई दिशा प्रदान की। भारतीय ज्ञान परम्परा में शिव का स्वरूप इस व्यापक सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक माना जाता है।

ज्योतिर्लिंग की अवधारणा : दार्शनिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- 'ज्योतिर्लिंग' शब्द दो पदों 'ज्योति' और 'लिङ्ग' से मिलकर बना है। 'ज्योति' का अर्थ है दिव्य प्रकाश तथा 'लिङ्ग' का अर्थ है वह प्रतीक जिसके माध्यम से निराकार ब्रह्म की अनुभूति की जा सके। इस प्रकार ज्योतिर्लिंग शिव के उस अनन्त प्रकाशस्वरूप का प्रतीक है जो समय, स्थान और रूप की सीमाओं से परे है।

शिवपुराण के अनुसार एक अवसर पर ब्रह्मा और विष्णु के मध्य श्रेष्ठता का विवाद उत्पन्न हुआ। उसी समय अनन्त अग्निस्तम्भ के रूप में शिव प्रकट हुए। ब्रह्मा ऊपर तथा विष्णु नीचे तक उस ज्योति के आदि और अन्त की खोज करते रहे, परन्तु दोनों असफल रहे। यह कथा दार्शनिक रूप से इस तथ्य को प्रतिपादित करती है कि परम सत्य अनन्त और असीम है, जिसे सीमित बुद्धि से पूर्णत: ज्ञात नहीं किया जा सकता।

भारतीय दर्शन में ज्योतिर्लिंग किसी मूर्ति-पूजा की अवधारणा मात्र नहीं है, बल्कि यह निराकार ब्रह्म के साकार प्रतीक का दार्शनिक प्रतिपादन है। अद्वैत, शैव तथा तांत्रिक परम्पराओं में लिङ्ग को सृष्टि के मूल तत्तव का प्रतीक माना गया है।

इतिहासकारों का मत है कि ज्योतिर्लिंग परम्परा का व्यवस्थित स्वरूप गुप्तोत्तर एवं प्रारम्भिक मध्यकाल में विकसित हुआ। इसी काल में शैव सम्प्रदायों, मंदिर स्थापत्य तथा तीर्थ-यात्राओं का व्यापक विस्तार हुआ। विभिन्न राजवंशों ने प्रमुख शिव मंदिरों को संरक्षण प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप ये तीर्थ सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र बन गए।

द्वादश ज्योतिर्लिंगों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन- भारतीय परम्परा में द्वादश ज्योतिर्लिंगों का उल्लेखशिवपुराणतथा अन्य पुराणों में प्राप्त होता है। यद्यपि इनकी धार्मिक प्रतिष्ठा अत्यधिक प्राचीन है, किन्तु इनके वर्तमान मंदिरों का स्थापत्य एवं ऐतिहासिक विकास विभिन्न कालों में हुआ। प्रत्येक ज्योतिर्लिंग स्थानीय इतिहास, क्षेत्रीय संस्कृति तथा अखिल भारतीय तीर्थ-परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है।

(1) सोमनाथ ज्योतिर्लिंग (गुजरात)- सोमनाथ भारतीय इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण मंदिर है। प्राचीन काल से यह पश्चिमी भारत के समुद्री व्यापार तथा तीर्थ-परम्परा का प्रमुख केन्द्र रहा। मंदिर पर अनेक विदेशी आक्रमण हुए, किन्तु प्रत्येक बार इसका पुनर्निर्माण भारतीय समाज की सांस्कृतिक दृढ़ता का प्रतीक बना। स्वतंत्रता के पश्चात् सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रेरणा से इसका पुनर्निर्माण भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है।

(2) मल्लिकार्जुन (श्रीशैलम्, आंध्र प्रदेश)- कृष्णा नदी के तट पर स्थित श्रीशैलम् दक्षिण भारत की शैव एवं शक्ति परम्पराओं का प्रमुख केन्द्र है। सातवाहन, चालुक्य, काकतीय तथा विजयनगर शासकों ने इस मंदिर को संरक्षण प्रदान किया। यह मंदिर उत्तर और दक्षिण भारत के सांस्कृतिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।

(3) महाकालेश्वर (उज्जैन, मध्य प्रदेश)– उज्जयिनी प्राचीन भारत के प्रमुख सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा खगोलीय केन्द्रों में रही है। महाकालेश्वर मंदिर का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। परमार शासकों तथा बाद में मराठा शासन के दौरान मंदिर का पुनरुद्धार हुआ। महाकाल की भस्म आरती भारतीय धार्मिक परम्पराओं की विशिष्ट पहचान है।

(4) ओंकारेश्वर (खंडवा,मध्य प्रदेश)– नर्मदा नदी के मध्य मन्धाता द्वीप पर स्थित ओंकारेश्वर भारतीय पवित्र भूगोल का अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ है। यहाँ 'ॐ' आकार का द्वीप भारतीय दार्शनिक प्रतीकवाद को मूर्त रूप प्रदान करता है। परमारों तथा मराठा शासकों ने इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(5) केदारनाथ (उत्तराखण्ड)– हिमालय की गोद में स्थित केदारनाथ भारत की प्राचीनतम तीर्थ-परम्पराओं में से एक है। इसे आदि शंकराचार्य द्वारा पुनर्जीवित चारधाम परम्परा का महत्वपूर्ण केन्द्र माना जाता है। कठोर भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद यह तीर्थ भारतीय आस्था और सांस्कृतिक निरन्तरता का अद्धितीय उदाहरण है।

(6) काशी विश्वनाथ (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)– काशी को भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक राजधानी कहा गया है। काशी विश्वनाथ मंदिर शिक्षा, दर्शन, संगीत तथा संस्कृत अध्ययन का प्रमुख केन्द्र रहा है। विभिन्न कालों में मंदिर के पुनर्निर्माण ने भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना को निरन्तर जीवित रखा।

(7) त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र) – गोदावरी नदी के उद्गम क्षेत्र में स्थित त्र्यंबकेश्वर वैदिक परम्परा, ज्योतिष तथा धार्मिक अनुष्ठानों का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यह कुंभ परम्परा से भी जुड़ा हुआ है और भारतीय तीर्थ-संस्कृति में विशिष्ट स्थान रखता है।

(8) वैद्यनाथ – वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग की स्थिति को लेकर ऐतिहासिक मतभेद विद्यमान हैं। एक परम्परा इसे देवघर (झारखंड) में मानती है, जबकि दूसरी परम्परा परली वैजनाथ (महाराष्ट्र) का समर्थन करती है। इतिहासकारों के लिए यह विषय स्रोत-समालोचना का उदाहरण है। प्रस्तुत अध्ययन दोनों परम्पराओं का सम्मान करते हुए विवाद का निष्पक्ष उल्लेख करता है।

(9) भीमाशंकर (महाराष्ट्र) – सह्याद्रि पर्वतमाला में स्थित भीमाशंकर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र जैव विविधता तथा प्राचीन शैव परम्परा का संगम प्रस्तुत करता है।

(10) नागेश्वर (गुजरात) – नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के स्थान को लेकर भी विभिन्न परम्पराएँ उपलब्ध हैं, किन्तु द्वारका के समीप स्थित नागेश्वर वर्तमान में व्यापक रूप से मान्य है। यह पश्चिमी भारत की समृद्धी तीर्थ-परम्परा से जुड़ा हुआ है।

(11) रामेश्वरम् (तमिलनाडु) – रामेश्वरम् उत्तर और दक्षिण भारत के सांस्कृतिक समन्वय का सर्वोच्च प्रतीक है।रामायणपरम्परा के अनुसार भगवान राम ने लंका विजय के पूर्व यहाँ शिवलिंग की स्थापना की। यह तीर्थ शैव और वैष्णव दोनों परम्पराओं के समन्वय का अद्भुत उदाहरण है।

(12) घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र) – एलोरा के समीप स्थित घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग भारतीय स्थापत्य, शिल्पकला तथा शैव परम्परा का महत्वपूर्ण केन्द्र है। समीप स्थित कैलासनाथ मंदिर भारतीय शिल्पकला की उत्कृष्ट उपलब्धियों में गिना जाता है। घृष्णेश्वर इस सांस्कृतिक क्षेत्र की निरन्तरता को अभिव्यक्त करता है।

द्वादश ज्योतिर्लिंग और भारतीय सांस्कृतिक एकता : एक विश्लेषण– द्वादश ज्योतिर्लिंगों का भौगोलिक विस्तार सम्पूर्ण भारत में फैला हुआ है। पश्चिम में सोमनाथ और नागेश्वर, उत्तर में केदारनाथ, मध्य भारत में महाकालेश्वर एवं ओंकारेश्वर, पूर्व में वैद्यनाथ तथा दक्षिण में मल्लिकार्जुन और रामेश्वरम् ये सभी तीर्थ भारतीय सांस्कृतिक भूगोल के ऐसे केन्द्र हैं जिन्होंने सहस्राब्दियों से विविध क्षेत्रों के लोगों को एक साझा सांस्कृतिक चेतना से जोड़ा है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में तीर्थयात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुभव और सांस्कृतिक संवाद का माध्यम रही है। एक तीर्थयात्री जब उत्तर से दक्षिण अथवा पश्चिम से पूर्व की यात्रा करता था, तब वह विभिन्न भाषाओं, लोकपरम्पराओं, भोजन, वेशभूषा, स्थापत्य और सामाजिक जीवन से परिचित होता था। इस प्रकार तीर्थ-परम्परा ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक आदान-प्रदान और राष्ट्रीय एकात्मता को निरन्तर सुदृढ़ किया। इतिहासकारों का मत है कि प्रमुख मंदिरों के आसपास नगरों का विकास हुआ, व्यापारिक मार्ग सक्रिय हुए तथा शिल्प, मूर्तिकला, संगीत और साहित्य को संरक्षण मिला। महाकालेश्वर, काशी विश्वनाथ, सोमनाथ और रामेश्वरम् जैसे तीर्थ केवल पूजा-स्थल नहीं थे, बल्कि शिक्षा, दान, धर्मशालाओं, अन्नक्षेत्रों और सामाजिक सहयोग के केन्द्र भी रहे। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक जीवन दोनों को स्थायित्व मिला।

द्वादश ज्योतिर्लिंगों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे भारत की भौगोलिक विविधता को आध्यात्मिक एकता में रूपान्तरित करते हैं। हिमालय, मरुस्थल, तटीय प्रदेश, पठार, नदी घाटियाँ और वन क्षेत्र सभी इस तीर्थ-परम्परा से जुड़े हैं। इससे भारतीय संस्कृति का यह संदेश पुष्ट होता है कि भौगोलिक विविधता सांस्कृतिक विभाजन का नहीं, बल्कि एक व्यापक सभ्यतागत एकता का आधार है।

समकालीन भारत में भी द्वादश ज्योतिर्लिंगों का महत्व निरन्तर बढ़ा है। धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत संरक्षण, तीर्थ विकास परियोजनाएँ और डिजिटल माध्यमों से इन स्थलों का पुनर्परिचय भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता को नई ऊर्जा प्रदान कर रहा है। साथ ही, इन स्थलों के संरक्षण में स्थानीय समुदायों की सहभागिता, पर्यावरणीय संतुलन और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि द्वादश ज्योतिर्लिंग भारतीय ज्ञान परम्परा के ऐसे जीवंत केन्द्र हैं जिन्होंने केवल धार्मिक आस्था का ही नहीं, बल्कि भारतीय इतिहास, संस्कृति और सभ्यता की निरन्तरता का भी प्रतिनिधित्व किया है। इन तीर्थों ने विभिन्न ऐतिहासिक कालों में सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संवाद, ज्ञान-विनिमय तथा राष्ट्रीय एकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि द्वादश ज्योतिर्लिंगों का ऐतिहासिक महत्व केवल पुराणीय आख्यानों तक सीमित नहीं है। इनके विकास में विभिन्न राजवंशों, स्थानीय समाज, संत-परम्पराओं तथा तीर्थ-यात्रा नेटवर्क का महत्वपूर्ण योगदान रहा। अनेक मंदिरों के पुनर्निर्माण और संरक्षण का इतिहास भारतीय समाज की सांस्कृतिक दृढ़ता तथा सभ्यतागत निरन्तरता का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल भाव समन्वय, सहअस्तित्व और लोकमंगल है। द्वादश ज्योतिर्लिंग इसी समन्वयवादी दृष्टि के मूर्त प्रतीक हैं। उन्होंने उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम तथा विभिन्न भाषायी और सांस्कृतिक क्षेत्रों को एक साझा आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सूत्र में बाँधने का कार्य

किया।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में इन तीर्थों का अध्ययन केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक भूगोल, विरासत अध्ययन, इतिहासलेखन, पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्विषयक संदर्भों में भी अत्यन्त आवश्यक है। यही दृष्टिकोण भारतीय इतिहास के अधिक संतुलित एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य पर आधारित पुनर्पाठ को भी सुदृढ़ करता है।

सुझाव:

1. द्वादश ज्योतिर्लिंगों पर अभिलेखीय एवं पुरातात्त्विक शोध को प्रोत्साहित किया जाए।
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के पाठ्यक्रमों में तीर्थ-परम्परा और सांस्कृतिक भूगोल को समुचित स्थान दिया जाए।
3. प्रत्येक ज्योतिर्लिंग से संबंधित अभिलेखों, ताम्रपत्रों तथा प्राचीन पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण किया जाए।
4. तीर्थ विकास योजनाओं में सांस्कृतिक विरासत संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन को प्राथमिकता दी जाए।
5. भारतीय इतिहासलेखन में तीर्थ-परम्पराओं के सांस्कृतिक योगदान पर अधिक अंतर्विषयक अनुसंधान किए जाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Agrawala, V. S. (1965). *Studies in Indian Art*. Varanasi: Prithivi Prakashan.
2. Basham, A. L. (1954). *The Wonder That Was India*. London: Sidgwick & Jackson.
3. Bhattacharya, S. C. (Ed.). (2010). *History, Philosophy and Culture: Revisiting Professor G. C. Pande's Thought and Works*. New Delhi: Aryan Books International.
4. Gita Press. (2021). *Îúâdi Nau Upanicad* (includes *Úvetâúvatara Upanicad*). Gorakhpur: Gita Press.
5. Gita Press. (2022). *Mahâbhârata*. Gorakhpur: Gita Press.
6. Gita Press. (2022). *LiEga MahâpurâGa*. Gorakhpur: Gita Press.
7. Gita Press. (2023). *Skanda MahâpurâGa* (Selected Volumes). Gorakhpur: Gita Press.
8. Gita Press. (2023). *Úiva MahâpurâGa*. Gorakhpur: Gita Press.
9. Jayaswal, K. P. (1924). *Hindu Polity*. Bangalore: Bangalore Printing & Publishing.
10. Kak, S. (2001). *The Astronomical Code of the Rigveda*. New Delhi: Munshiram Manoharlal.
11. Kane, P. V. (1930–1962). *History of Dharmaúâstra* (Vols. I–V). Pune: Bhandarkar Oriental Research Institute.
12. Kapoor, K., & Singh, A. K. (Eds.). (2005). *Indian Knowledge Systems* (2 vols.). Shimla/New Delhi: Indian Institute of Advanced Study & D.K. Printworld.
13. Kramrisch, S. (1981). *The Presence of Œiva*. Princeton, NJ: Princeton University Press.
14. Michell, G. (1988). *The Hindu Temple: An Introduction to Its Meaning and Forms*. Chicago: University of Chicago Press.
15. Mookerji, R. K. (2004). *The Fundamental Unity of India*. Hyderabad: Orient Blackswan.
16. Mookerji, R. K. (1958). *Hindu Civilization*. New Delhi: Hind Kitabs.
17. Pande, G. C. (1994). -भारतीय संस्कृति. नई दिल्ली: National Publishing House.
18. Pande, G. C. (1998). *Life and Thought of ÚaEkarâcârya*. New Delhi.
19. Pande, G. C. (2001). *Life, Thought and Culture in India*. New Delhi: Centre for Studies in Civilizations.
20. Radhakrishnan, S. (1927). *The Hindu View of Life*. London: George Allen & Unwin.
21. Radhakrishnan, S. (2008). *Indian Philosophy* (Vols. I–II). New Delhi: Oxford University Press.
22. Rocher, L. (1986). *The PurâGas*. Wiesbaden: Otto Harrassowitz.
23. Sastri, K. A. N. (1955). *A History of South India*. Madras: Oxford University Press.
24. Sharma, R. C. (1997). *Indian Temple Architecture*. New Delhi: B.R. Publishing.
25. Singh, V. P. (1995). -भारतीय संस्कृति का इतिहास. नई दिल्ली.
26. Tripathi, R. S. (1967). *History of Ancient India*. Delhi: Motilal Banarsidass.
27. सरकारी एवं संस्थागत प्रकाशन
28. Archaeological Survey of India. (2023). *Annual Report 2022–23*.
29. Archaeological Survey of India. *Indian Archaeology – A Review* (विभिन्न वर्ष).
30. Indian Council of Historical Research. विभिन्न शोध प्रकाशन..
31. Indira Gandhi National Centre for the Arts. -भारतीय मंदिर एवं सांस्कृतिक विरासत संबंधी प्रकाशन.
32. Indira Gandhi National Centre for the Arts. *Kalâsampadâ Digital Library*.
33. Ministry of Education. *Indian Knowledge Systems (IKS) Framework*.
34. Bhandarkar Oriental Research Institute. संस्कृत ग्रंथों के आलोचनात्मक संस्करण.
35. Rashtriya Sanskrit Sansthan. शैव एवं पुराण साहित्य संबंधी प्रकाशन.
36. Sampurnanand Sanskrit University.पुराण एवं भारतीय दर्शन संबंधी शोध प्रकाशन.

****